अवध ज्योति

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

वर्ष – 21

जनवरी–मार्च – 2015

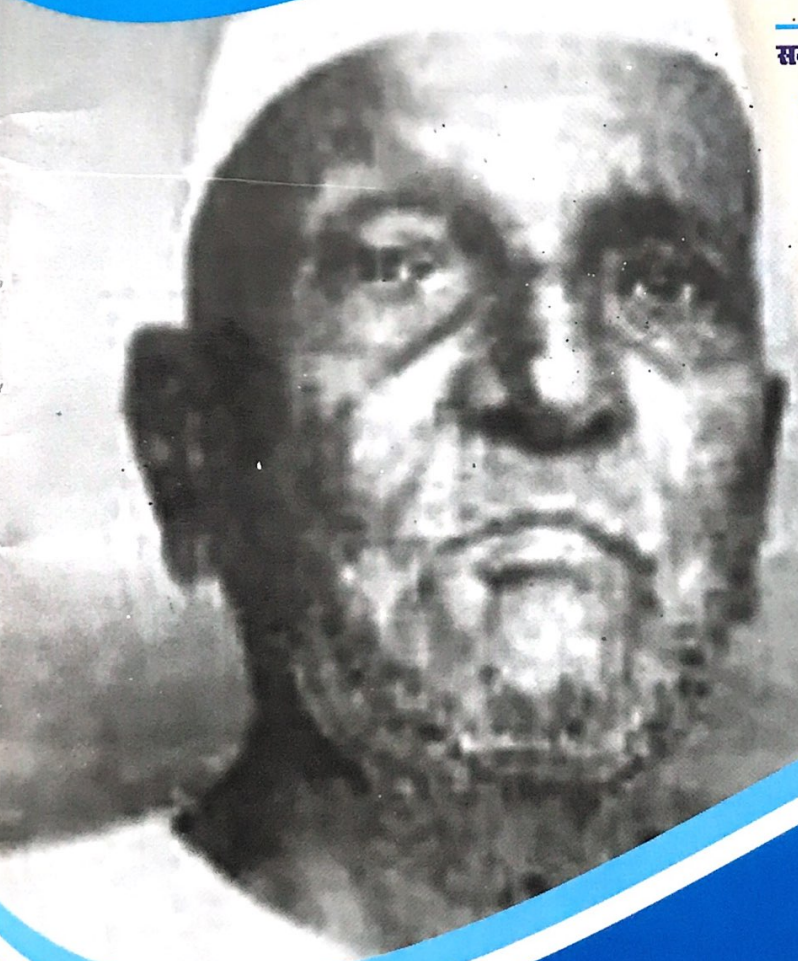

वंशीधर शुक्ल : एक विराट महामानव

अवधी सम्राट पं. वंशीधर शुक्ल को याद करते हुए

समग्र लोक चेतना के राष्ट्रीय कवि : पं० वंशीधर शुक्ल

पं. वंशीधर शुक्ल का राष्ट्रवादी यथार्थ बोध

आधुनिक अवधी के प्रेमचंद : वंशीधर शुक्ल

वंशीधर शुक्ल : यादों के आइने में

वंशीधर शुक्ल के खड़ी बोली काव्य में हास्य व्यंग्य

पं. वंशीधर शुक्ल के काव्य में ग्राम्य वर्णन

अवधी के जाज्वल्यमान नक्षत्र वंशीधर शुक्ल

वंशीधर शुक्ल विशेषांक

अवध ज्योति

अवध भारती संस्थान की अवधी त्रैमासिकी

वर्ष - 21 जनवरी-मार्च 2015

संरक्षण
प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित
जगदीश पीयूष

❑

सम्पादक
डॉ0 रामबहादुर मिश्र

❑

उप सम्पादक
प्रदीप तिवारी

❑

प्रबन्ध सम्पादक
ओम प्रकाश 'जयन्त'

❑

सह सम्पादक
विष्णु कुमार शर्मा
विश्वम्भरनाथ अवस्थी
सूर्य प्रसाद शर्मा 'निशिहर'

❑

विधिक सलाहकार
एड. अनिल कुमार तिवारी

❑

एक प्रति - रु. 25
वार्षिक - रू. 100

इस अंक के अतिथि सम्पादक
डॉ0 दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'

अवध ज्योति से सम्बन्धित सभी विवादों का न्याय क्षेत्र हैदरगढ़ होगा।

विषय–क्रम

राम जोहारि – राम बहादुर मिसिर
सम्पादकीय – डॉ0 दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'
अवधी अकादमी का प्रस्ताव – अवध भारती संस्थान

लेख –
वशीधर शुक्ल : एक विराट महामानव - ओम प्रकाश अवस्थी
अवधी सम्राट पं. वंशीधर शुक्ल को याद करते हुए - राहुल देव
समग्र लोक चेतना के राष्ट्रीय कवि : पं0 वंशीधर शुक्ल - कोमल शास्त्री
पं. वंशीधर शुक्ल का राष्ट्रवादी यथार्थ बोध - डॉ0 श्याम सुन्दर दीक्षित
आधुनिक अवधी के प्रेमचंद : वंशीधर शुक्ल - डॉ0 विनयदास
वंशीधर शुक्ल : यादों के आइने में - डॉ0 अनामिका श्रीवास्तव
वंशीधर शुक्ल के खड़ी बोली काव्य में हास्य व्यंग्य-डॉ0 दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'
पं. वंशीधर शुक्ल के काव्य में ग्राम्य वर्णन - सीमा पाण्डेय
अवधी के जाज्वल्यमान नक्षत्र वंशीधर शुक्ल - डॉ0 ज्ञानवती दीक्षित

कवितायें --
डॉ0 भारतेन्दु मिश्र, शान्तिशरण मिश्र 'व्यंग्य सीतापुरी', डॉ0 रंगनाथ मिश्र 'सत्यं', डॉ0 अशोक 'गुलशन', शारदा प्रसाद वर्मा 'भुसुण्डि', डॉ0 बृजेन्द्र अवस्थी, सत्यधर शुक्ल
पं. वंशीधर शुक्ल : रचना संसार की बानगी
खड़ी बोली की रचनायें, अवधी रचनाएं, अवधी कहानी - बेदखली

नाप तौल :
नकछेद भाई, रमई काका का पुनर्पाठ

हाल चाल :
रमई काका जन्म शती समारोह, परिप्रेक्ष्य को सही करते हुए, राष्ट्रीय संगोष्ठी, कबीर ग्रंथावली, लोक भूषण, मलिक मोहम्मद जायसी तथा बलभद्र प्रसाद दीक्षित सम्मान।

सम्पादकीय पत्र व्यवहार - कार्यालय अवध भारती संस्थान - लोक कला मंच लोक सदन नरौली, बीजापुर (हैदरगढ़) बाराबंकी - 225 124
लखनऊ कार्यालय : 610/112, ए केशवनगर, सीतापुर रोड, लखनऊ-226 020
मो. 9450063632, **e-mail :** awadjyoti@gmail.com, salmanansari7@gmail.com

राम जोहारि

चौराहे पर ठाढ़ि किसनऊ

अवधी के निराला बंशीधर शुकुल की कविता कै ई कड़ी 'चौराहे पर ठाढ़ि किसनऊ ताकैं चारिउ वार देस का को है जिम्मेदार? हमरे लोकतंत्र की बेवस्था पर सवाल उठावत हैं। किसान का अन्नदाता, गांव कै देउता, दुनिया कै पेट भरैया अउ धरता मैया कइ पुजइया न जानी कतनी कतनी उपाधि से वहिका नवाजा गवा तबौ, आजौ। आजादी के पहिले किसान बेगारी, जमींदारी, सूदखोरी के जाल मां फंसा रहा अब आजादी के बादौ तमामन दुसवारी म आपन गाड़ी झुरही ठठरी के बल पर खैंचत जात है। किसान औ किसानी जुगाधिन से आज तक दलित, शोषित वंचित है यक मेर से देखा जाय गांव जउन कृषि संस्कृति अउ श्रम संस्कृति खातिर जाने पहिचाने जाते रहें आज दुइनौ कै लोप होइ गवा है। खेती अलाभकारी धन्धा होइ गवा। ई खातिर किसान आपन आगम अब अलग देखै लाग। दिल्ली वाली सरकार मनरेगा कै चहै जतना डंका पीटै अउ गांवन मा रोजगार कै सपन देखावै, हकीकत कुछ दुसरै हैं। गांव कै नई पीढ़ी सहर भागत है सुख भोगै नाहीं, दुःख के दिन काटै खातिर। सड़क के फुटपाथ अउ पारिक मा या फिर नारा खोरा के किनारे आपन गुजर बसर करत है। धरती माता वहिकै बिछौना अउ आसमान ओढ़ना। किसान बेचारा गरमी, बरिखा, जाड़े मा रात दिन यक कइ दियत है। खून पसीना यक कइके सबकै पेट भरत है मुला ऊ खुद भिखमंगा बनि गवा है। किसान अउ किसानी दूनौ पै गरानी है। ई हमरे देश और समाज खातिर अच्छा आगम नाही।

किसान अउ किसानी पर दुइतरफा मार है। पहिल तौ भगवान कै कोप कबौ, पाला, कबौ पाथर, कबौ बहिया, कबौ झूरा, कहौं बाढ़, तौ कहौं पल्लौझार, सब तिना से किसानी कै बंटाधार। खेत कइ जोताई, बिया कै बोवाई, रोपाई, निराई गोंडाई, खाद-पानी, किरवा, फतिंगवा कै दवाई तब कहौं जाय के फसिल तयार होत है। मुला सामकूल घर का आय-जाय तब जानौ। अतनी लागत लगाये के बाद औ जामा गलाये के बाद पांच छ सौ रूपया कै गल्ला देखै के मिलत है। यहै नहीं कउनेव कउनेव साल तौ जतना रूपया लगावा जात है वहिकै यक्कै हींसा कै गल्ला देखै क नहीं मिलत। अब देखौ न पारसाल के बाद आय जगजीवन अहिर चार विगहा धान लगाइन। भादौं मा दइव तड़कि गवा, नहरौ धोखा दै दिहिस, बिजुली कै बीसन दिन दरसन नहीं भयें। भद्दर जवानी मा धान पैरा होइ गवा खेत झुराय के खाक होइ गवा, दाना से भेंट नहीं खेत साफ करावै मा उप्पर से सात आठ सौ रूपया लागि गवा बेचारे किसान क्रेडिट कारड से करजा लिहिन रहै अब बताऊँ कहाँ से पाटै करजा? लरिका बच्चा काउ खायँ। कपड़ा, लत्ता, पढ़ाई-लिखाई, दवाई-दरमत कसक करैं? है कोऊ सुनवइया? फांसी लगाय के मरिहैं न तौ का करिहैं?

यक अउर बिसंगति! नवधा लरिका बिटिया-बेटवा बी0ए0 एमे पास कइ लिहिन। बी0एड0, बी0पी0एड, एल0एल0बी0, पालीटेक्निक, बी0टेक, एम0टेक, जइसन डिगरी लइके गांवन मां सेखी बघारत है। उनसे धेला भरे कै टहल नहीं सपरत। पांड़े दुइनौ दीन से गयें न हेलुवा न माड़ी। दिन भर मोबाइल कै लीड काने मा घुसेरे पान पुकार, श्याम बहार कै पुड़िया झोंकत, फिरत हैं गांव-गेरांव के चाय-पान की गुमटी पर दिन बितावत हैं, अखबार पढ़ि-पढ़ि अउ बतकच्चर कइके। काम के न काज के दुश्मन अनाज के। अब उइ आपन सारी अकिल यही मा लगावत हैं कि बिना हाथ गोड़ डोलाये, पेटे कै पानी हाले बिना कसक जेब खर्चा आवै-न हर चलै न चलै कुदारी बइठे भोजन देयं मुरारी। महतारी-बाप उनकी नजर मा हरवाह चरवाह से बदतर। बेचारे महतारिउ बाप पुरबिले जनम के करजी। मरि-मरि के करजा पाटत हैं। अपना यक रोटी यक धोती मा काम चलावत हैं। अउ लरिकन खातिर आपन जामा गलाय के उनकै जरूरति पूरा करत हैं। जब कबौ लरिकन से कमाय धमाय कै बात करत हैं तब उलटे जबाब पावत हैं नौकरी जेब मा नाही धरी। दुइ चार बिगहा बेंचि बिकिन के जुगाड़ करौ तौ नौकरी मिलै अब उनसे को कहे कि जर जमीन महतारी बाप लरिकनै बच्चन खातिर तौ जोगवत हैं मुला लरिका ससुर हैं - परे भुसैले मउज करित है फुहरिन पीसा खाई, का काहू के नौकर चाकर कीच मंझावै जाई। ई तौ आय किसान कै आपन बिथा। आपन बिथा तौ निमरे पतरे सहि लेत हैं। मुला समाज कै रवइया देखि के वहिकै मन मसोसि के रहि जात है। वहिके मन कइ बात वंसीधर दादा अपनी कबिता मा लिखिन हैं -

चौराहे पर ठाढ़ि किसनउ ताकैं चारिउ वार, देस का को है जिम्मेदार?
कहूं न जोति दिया न बाती कोई हित न सखा संघाती
चलै बिकट बौझरा पछहियां उड़ै रथी जस तिनका पाती
उगिलै अंधकार चौगिर्दा सूझि न परै अगार देस का को है जिम्मेदार?

वंसीधर दादा गांव औ गरीबी, किसानी औ किसानी कै जमीनी सच्चाई उकेरिन हैं। विधायक बने के बादौ उनकै माली हालत चपरासी से गई गुजरी रही। मुला बड़े-बड़े नेता, मंत्री मुख्यमंत्री अउ परधान मंत्री कै बखिया उधेरि के धै दिहिन, उनकै खटिया खड़ी कइ दिहिन। भ्रष्ट राजनीति, मक्कारी, घूसखोरी, सामंती बेवस्था, पूंजीवाद, शोषण अउ नौकरशाही के खिलाफ उइ आगि उगिलिन अउ देश की आजादी खातिर बीसन बार जेल जायके आजादी की लड़ाई कै अलख जगाइन। सच्ची बात तौ ई है कि उइ अवधी के निराला अहीं। उनके एक सौ दसये जनम दिवस के मौका पर पत्रिका कै ई अंक अवधी के सच्चे सपूत का समरपित है। ई अंक के अतिथि सम्पादक है भइया डॉ. दिनेश तेवारी जो वंशीधर दादा पर आधारित शोध किहिन अउ उनकी रचनाधर्मिता के परखैया है। अतने बढ़िया सम्पादन खातिर अवध-ज्योति परिवार उनकै आभारी हैं। सब पाठक लोगन का अंगरेजी साल 2015 औ विक्रम संवत 2072 मंगलमय होय यही कामना के साथे सबका रामजोहारि-

राम बहादुर मिसिर

अतिथि सम्पादक की कलम से...

भईया रामबहादुर मिसिर 'बंशीधर शुक्ल विशेषांक' के सम्पादन कै जिम्मेदारी सौंपिन तो पहिले एक बार मन पछिरा मुला फिर उनकै आदेश जानि के हम ई जिम्मेदारी स्वीकार कै लिहेन। बंशीधर शुक्ल के साहित्य पर शोध करै के दौरान उनके समस्त उपलब्ध साहित्य का खूब पढ़े रहेन। जब-तब शुक्ल साहित्य पर हमार लेख पत्र-पत्रिका माँ प्रकाशित होवा किहिस है। तो इ लिहाज से हमरे लिए कुछ नवा नाई रहा। मन माँ ई विशवास रहा कि सम्पादन कै दायित्व निभाय लै जाबै औ भईया रामबहादुर का निराश न होय का परी। किन्तु जस-जस ई दिशा माँ काम आगे बढ़ावा तस-तस लागै लाग कि सम्पादन कै काम अतना आसान नाई है जतना हम समझे रहेन। भईया रामबहादुर के हिम्मत औ धैर्य के प्रति मन श्रद्धा से भरि गवा। आश्चर्य होत है कि कौने बिधे वै पिछले बीस साल से अवधी के उत्थान बदे ई पत्रिका कै अनवरत सम्पादन-प्रकाशन करि रहे हैं।

आपन सामर्थ्य भर ई अंक माँ बेहतर सामग्री संजोवै कै प्रयास किहे हन बाकी तो आप विद्वान् पाठक गन बतइहौ कि अंक कास बन पड़ा है ?

इ अंक के सम्पादन के दौरान तमाम कटु औ निराशाजनक अनुभव भवा तौन आपसे साझा करा चाहित है। हमार दिली इच्छा रही कि अंक माँ बंशीधर शुक्ल के स्वनाम धन्य सुपुत्र सुकवि सत्यधर शुक्ल औ उनके परिवार के सदस्य लोगन कै कुछ संस्मरण शामिल करी ताकि पाठक गन बंशीधर शुक्ल के व्यक्तित्व के तमाम अनछुए पहलू से परिचित होय सकैं। येस्के लिए हम सत्यधर शुक्ल जी से कई-कई बार संपर्क किहेन। उनसे बड़ा विनम्र आग्रह किहेन कि अपने पिता पर वै कुछ लिखै , मुला खेद है कि वै कौनो सहयोग नाहीं किहिन।

बंशीधर शुक्ल जी की अवधी कवितायें 'लखनऊ विश्वविद्यालय', 'डा० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय' औ कानपुर विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम माँ पढ़ाई जात हैं। हम ई सब विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयन के कई प्राध्यापकन से अनुरोध किहेन कि वै बंशीधर शुक्ल जी पर कुछ लिखें। हमार विचार इ रहा कि अध्यापन के दौरान शायद वै लोग शुक्ल साहित्य के कुछ नए आयाम कै संधान किहिन होंय। दुर्भाग्य ! कि इहौं निराश होय का पड़ा। बार-बार अनुरोध करै के बादौ इ प्राध्यापकगन एक्कौ पंक्ति लिखि कै नाई दै पाइन। यै का पढ़ावत होइहैं कक्षा माँ, भगवानै जानैं।

लगभग एक दर्जन नामी-गिरामी लेखकन के पास हम आपन पुस्तक 'बंशीधर शुक्ल का खड़ी बोली काव्य' औ शुक्ल जी कै तमाम अवधी कविता कै फोटो स्टेट करवाय कै इ अनुरोध के साथ भेजा कि वै शुक्ल जी के साहित्य पर कुछ लिखै, पर इहौं 'नाम बड़े पर दर्शन छोटे' वाला हाल रहा। कइव जने तो आज लिखि देइत है , काल लिखि देइत है, कहि-कहि टरकावा किहिन, लेकिन अंत तक कुछ लिखि कै दै नाई पाइन।

हम बड़े आभारी हन उई सब लेखकन कै जे समय रहते हमैं सामग्री उपलब्ध कराइन। अगर इनके सबके सहयोग न मिलत तो हम भईया रामबहादुर मिसिर के विश्वास पर खरा न उतरि पाइत। खास रूप से कृतज्ञ हन आदरणीय विनयदास जी, श्याम सुन्दर दीक्षित जी, ओम प्रकाश अवस्थी जी के प्रति जे न केवल आपन आलेख समय से दिहिन बल्कि निरंतर फोन कै-कै के हमार हिम्मत बढ़ावा किहिन।

बंशीधर शुक्ल के अवधी साहित्य पर तो आज ले खूब लेखन भवा है लेकिन उनके खड़ी बोली के साहित्य औ उनके अवधी गद्य लेखन पर अनुसंधित्सु लोगन कै सृष्टि बिलकुल नाई परी। ई अंक माँ हमार ई प्रयास रहा कि उनके साहित्य के ई पक्ष भी प्रकाश माँ आवै। अंक माँ विनयदास जी कै लेख 'आधुनिक अवधी के प्रेमचंद्र' इ दिशा माँ उल्लेखनीय है।

अंत माँ पुनः भईया रामबहादुर मिसिर के प्रति अनंत आभार कि वै हमैं ई मौका दिहिन जेहसे हमरे अनुभव क्षेत्र कै विस्तार भवा। अंक के प्रति आप सुधी पाठकगन के प्रतिक्रया कै प्रतीक्षा रही .....

डॉ0 दिनेश त्रिपाठी 'शम्स'
मो. 9559304131